2 दुःख का अधिकार

-यशपाल

पाठ का सार

यह कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच-नीच के भेदभाव को बेनकाब करते हुए यह बताती है कि दुख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की मजबूरी को भी पूरी गहराई से उजागर करती है। यह सही है कि दुख सभी को तोड़ता है, दुख में सब अवश हो जाते हैं, पर इस देश में ऐसे भी अभागे लोग हैं जिन्हें न तो दुख मनाने का अधिकार है, न अवकाश।

साग-भाजी उगाकर और बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण करनेवाली एक अधेड़ औरत पर उस दिन दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है जब एक साँप के काटने से उसके जवान बेटे भगवाना की अकाल मृत्यु हो जाती है। बेटे के कफ़न-दफ़न का इंतज़ाम करने में माँ का इकलौता गहना भी बिक जाता है। घर में न खाने को कुछ है, न कमाकर लानेवाला ही बचा है। वह स्वयं भी भूखी-प्यासी है और उसकी बहू और पोता-पोती भी। जिन खरबूज़ों को तोड़ने के दौरान बेटा उस जानलेवा दुर्घटना का शिकार हुआ था, उनके अलावा घर में ऐसा कुछ नहीं था जिसे बेचा जा सके। वह वही खरबूज़े लेकर बाज़ार जाती है ताकि उन्हें बेचकर इन भूखों के पेट में दो-एक निवाले पहुँचाए जा सकें। बाज़ार में बैठते ही बेटे को याद करके फूट-फूटकर रोने लगती है। उसे वहाँ आया हुआ देखकर आसपास के दुकानदार उसका अपमान करते हैं।

लेखक दुकानदारों से उसके रोने का कारण जानना चाहता है। बातचीत के दौरान उसे पता चलता है कि बुढ़िया का जवान बेटा कल ही गुज़रा है, मगर यह कमाई की इतनी भूखी है कि उसका शोक मनाने की जगह यहाँ बाज़ार में दुकानदारी करने आ बैठी है। लेखक को यह जानकर हैरानी नहीं होती कि ये लोग अपना बेटा खो चुकी उस माँ के प्रति ज़रा भी सहानुभूति नहीं रखते। उसे याद आता है कि उसकी एक परिचित धनाढ्य महिला का बेटा गुज़रा था तब वह महीनों तक शोक के सागर में ही डूबी रही थी। लेखक को अहसास है कि यहाँ तो दुख मनाने का अधिकार भी सबको नहीं है। दुख भी वे ही मना सकते हैं जिनके पास भरण-पोषण के खूब साधन हैं। जिन्हें रोज़ कमाना और रोज़ पेट भरना पड़ता है, वे बड़े से बड़े आघात के लिए भी शोक मनाने का अवकाश कहाँ जुटा पाते हैं?

SuccessCDs

पाठ—2 कक्षा—9

दुःख का अधिकार

लेखक यशपाल

❖ निबंधात्मक प्रश्नोत्तर Long-Answer Questions

प्र.1 बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन बुढ़िया को खरबूज़े बेचने आया देख बाज़ार के लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करने लगे। कोई कह रहा था कि इसके बेटे को मरे पूरा एक दिन भी नहीं बीता और यह बेशर्म खरबूज़े बेचने आ गई। लाला जी कह रहे थे कि इन्हें दूसरे के ईमान-धर्म का खयाल रखना चाहिए। सूतक के दिनों में सामान बेचने या खरीदने से धर्म बिगड़ता है। एक अन्य ने उसे बेहया कहा तो एक ने कहा कि जैसी नीयत होती है वैसी ही बरकत होती है।

प्र.2 पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर लेखक को पास-पड़ोस के दुकानदारों से पता चला कि इसका तेईस साल का बेटा कल मर गया है। कछियारी करते समय उसका पाँव मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर पड़ गया था। साँप ने उसे डस लिया था। झाड़-फूँक, पूजा आदि में घर का राशन स्वाहा हो गया। घर में बहू तथा पोता-पोती हैं। उनके मुँह तक निवाला पहुँचाने के लिए खरबूज़े बेचने बाज़ार में आई है।

प्र.3 लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर बुढ़िया के एकमात्र पुत्र भगवाना को जब साँप ने डस लिया तब बुढ़िया ने ओझा को बुलाकर झाड़-फूँक कराई। नाग देवता की पूजा की और घर में जो कुछ आटा-दाल था, सबकुछ ओझा के हवाले कर दिया।

प्र.4 लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

उत्तर लेखक ने जब बुढ़िया को रोते देखा तो उसे अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला याद आई। उसका भी जवान बेटा मर गया था। दुख और बेटे के वियोग से कातर वह अढ़ाई महीने पलंग से उठ नहीं पाई थी। उसे थोड़ी-थोड़ी देर में मूर्छा आ जाती थी और उसकी आँखें आँसुओं से भरी रहती थीं। दो-दो डॉक्टर उसके सिरहाने बैठे रहते थे।

प्र.5 इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' पूरी तरह सार्थक है। मृत्यु सभी को दुख पहुँचाती है— चाहे गरीब हो या अमीर। जवान बेटे की मृत्यु किसी के लिए भी दुख का कारण हो सकती है, परंतु अमीरी और गरीबी दुख मनाने के स्तर में अंतर ला देती है। अमीर माँ अढ़ाई मास तक दुख से कातर पलंग पर पड़ी रह सकती है परंतु एक गरीब माँ को एक दिन भी दुख मनाने की सहूलियत नहीं होती क्योंकि उसे अपने परिवार की भूख-प्यास की चिंता करनी पड़ती है। उनका पेट पालने के उपाय करने पड़ते हैं। पुत्र-शोक छोड़ रोटी की व्यवस्था को प्राथमिकता देनी पड़ती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर Question-Answers from Textbook

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर Short-Answer Questions

प्र.1 मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?

उत्तर पोशाक समाज में व्यक्ति का स्थान और अधिकार निश्चित करती है। भद्र पोशाक मनुष्य के लिए विकास के सभी दरवाज़े खोल देती है और अभद्र पोशाक सभी रास्ते बंद कर देती है पर भद्र पोशाक कभी-कभी निचले दर्ज़े के लोगों से मेल-मिलाप बढ़ाने में अड़चन भी बन जाती है।

प्र.2 पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर जब हम अपनी श्रेणी से निचली श्रेणी के लोगों के दुख-दर्द में शामिल हो उनकी मदद करना चाहते हैं तो हमारी कथित संभ्रांत पोशाक हमें अपने स्तर से नीचे उतरकर सहसा उनकी सेवा और सहायता नहीं करने देती। इन स्थितियों में वह बंधन और अड़चन बन जाती है।

प्र.3 लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर लेखक उच्चवर्गीय तथा अच्छी पोशाक पहने हुए था। उस पोशाक के कारण ही वह फुटपाथ पर नहीं बैठ पाया। ऐसा माना जाता है कि अच्छी पोशाक पहने व्यक्ति का ज़मीन पर बैठना शोभा नहीं देता। इसलिए लेखक उस स्त्री के रोने का कारण न जान सका।

प्र.4 भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर भगवाना के पास डेढ़ बीघा ज़मीन थी, जिस पर वह काश्तकारी करके हरी सब्ज़ियाँ और खरबूज़े उगाता था। उन्हीं को बाज़ार में बेचकर अपने परिवार का निर्वाह करता था।

प्र.5 लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर घर में पोता-पोती भूख से बिलबिला रहे थे और बीमार बहू को खिलाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। बेटे के दाह संस्कार में उसका इकलौता गहना भी बिक चुका था। अत: लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन कुछ पैसे कमाने के लिए बुढ़िया खरबूज़े बेचने चल पड़ी।

प्र.6 बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर लेखक के पड़ोस की संभ्रांत महिला अपने पुत्र की मृत्यु के शोक में अढ़ाई महीने पलंग से उठ नहीं सकी थी। वह पैसेवाली थी और उसे पैसे कमाने की कोई चिंता न थी। उसके पास दुख मनाने का अधिकार था। वह लंबे अर्से तक शोक मना सकती थी। एक यह वृद्धा थी जिसे तीन प्राणियों का पेट पालना था, इसलिए वह एक दिन भी जवान बेटे की मौत का शोक नहीं मना सकी थी।